19

चमको, ग्लोवर्म चमको

कायान्तरण करने वाले कीटों की विविध अवस्थाओं को लेकर हमारे मन में यह छवि होती है कि लार्वा तो बस तैयारी की अवस्था है, अविकसित है, अपूर्ण है। लेकिन अनेक कीटों में उनके जीवन चक्र में लार्वा अवस्था काफी लम्बी अवधि तक चलने वाली और प्रभावी अवस्था होती है। सिकाडा या ग्लोवर्म इसके उदाहरण हैं।

शायद लार्वा, प्यूपा को भी जैव-विकास के नज़रिए से देखना चाहिए। पूर्ण कायान्तरण वाले कीटों ने भोजन प्राप्त करने और प्रजनन को जीवन चक्र की अलग-अलग अवस्थाओं को आवंटित करने के लिए एक ऐसा श्रम विभाजन हासिल कर लिया है, जो हरेक गतिविधि में सूक्ष्म अनुकूलन को सम्भव बनाता है। स्टीफन जे गूल्ड एक वैकल्पिक नज़रिया प्रस्तुत करते हैं इस लेख में।

41

पढ़ना किसे कहते हैं?

पिछले बीस सालों में न केवल बच्चों की बल्कि वयस्कों की पढ़ने की प्रक्रिया को लेकर काफी शोधकार्य एवं अध्ययन हुए हैं। अब ज़्यादातर भाषाविद् मानते हैं कि पढ़ना किसी लिखित सामग्री से अर्थ-निर्माण की प्रक्रिया है जिसमें पूर्व जानकारी अत्यन्त महत्वपूर्ण रोल अदा करती है। यह एक अत्यन्त जटिल कौशल है जिसमें अनेक प्रकार की क्षमताओं का निरन्तर संवाद होता रहता है। पाठ्य-सामग्री को समझने के लिए पाठक पाठ्य-सामग्री के विषय के बारे में अपने पूर्व-ज्ञान का निरन्तर उपयोग करते हैं। एक अपरिपक्व पाठक और परिपक्व पाठक किस तरह किसी पाठ से फर्क किस्म से अर्थ निर्माण करते हैं, इन बारीकियों को समझने के लिए रिचर्ड सी. एंडर्सन व उनके साथियों के इस लेख को ज़रूर पढ़िए।

शैक्षणिक संदर्भ

अंक-29 (मूल अंक-86), मई-जून 2013

इस अंक में

5 | **गोल-गोल रानी, कितना-कितना पानी**
दिलीप चिंचालकर

13 | **जलने का फ्लॉजिस्टन सिद्धान्त**
सुशील जोशी

19 | **चमको, ग्लोवर्म चमको**
स्टीफन जे गूल्ड

36 | **भिन्न संख्याओं का भाग**
मो. उमर

41 | **पढ़ना किसे कहते हैं?**
रिचर्ड सी. एंडर्सन, ..., ... एवं अन्य

54 | **अच्छा सोचकर बनाऊँगा...**
यशस्वी द्विवेदी

57 | **एक कहानी और एक गीत**
तेजी ग्रोवर

66 | **गर्म तेल में पानी पड़ने से आवाज़ क्यों...**
सवालीराम

68 | **कौओं से घिरी माँ**
रिनचिन

79 | **सिकाडा**
विनता विश्वनाथन